शासनप्रभावक आचार्य श्रीजिनानंदसागरसूरि

[ले०—[redacted] मुनि महोदयसागर]

इस संसार की सपाटी पर अनेकों जन्मे और अनेकों मर गये, किन्तु अमर कौन है ? जो व्यक्ति धर्म, राष्ट्र एवं समाज के हित के लिये शहीद हो गये, वे मर कर भी आज संसार में अमर हैं।

जिन्होंने अपना पूरा जीवन जगत को भलाई में बिताया, सेवा करते समर्पित हो गये, वे देह रूप से भले विद्यमान न हों किन्तु कार्य से वे सदा के लिये अमर हैं।

पृथ्वी को 'बहुरत्ना' का पद दिया गया है। इस पृथ्वी पर अनेक संत, महंत, पीर पैगम्बर हो गये सभी ने जगत को शान्ति का मार्ग दिखाया, परस्पर मैत्री भाव का उपदेश दिया। संसार भी ऐसे ही महापुरुषों की अर्चना करता है। उन्हीं महापुरुषों के गुणों को याद कर, उनके पथ के अनुगामी बनकर जगत उनके उपकारों को कभी नहीं भूलता। उन्हीं महानुभावों की तो जयंतियां मनाई जाती है। सभी धर्म व सभी सम्प्रदायों में महापुरुष उत्पन्न हुये हैं। सदा से कड़ी से कड़ी जुड़ती आई है, ज्योत से ज्योत जलती आ रही है।

उन्हीं महापुरुषों में से है—हमारे परमपूज्य, परम उपकारी, परम-आदरणीय, प्रखर-वक्ता, आगम - ज्ञाता, शासन-प्रभावक आचार्यदेव श्री १००८ वीरपुत्र श्रीजिन-आनन्दसागरसूरीश्वरजी म० सा० हैं। आपकी संक्षिप्त जीवनी लिखकर मैं अपने को कृतार्थ समझता हूं।

भारत भूमि के मालवा प्रांत में सैलाना नगर में विक्रम सं० १९४६ आषाढ़ शुक्ल १२ सोमवार कोठारी खानदान में श्रेष्ठिवर्य श्री तेजकरण जी सा० की भार्या केशरदेवी की रत्नकुक्षी से आपका जन्म हुआ। आपका नाम यादवसिंहजी रखा गया।

सैलाना में मुसद्दी कोठारी खानदान, सर्वश्रेष्ठ, धर्मशील, सुसंस्कार युक्त एवं राजखानदान में भी सम्माननीय माना जाता है। आपकी तेजस्वी मुख मुद्रा, व सुन्दर लक्षण युक्त शरीर, भावि में होनहार की निशानी थी। व्यवहारिक शिक्षा आपश्री ने बाल्य अवस्था में प्राप्त करली थी।

स्व० प्रवर्त्तिनीजी श्री ज्ञानश्रीजी का चातुर्मास सैलाना में हुआ। बचपन से ही आप में धार्मिक सुसंस्कार के कारण आप साध्वीजी के प्रवचन में जाया करते थे, समय समय पर आप उनसे धार्मिक चर्चा, शंका-समाधान किया करते थे। चातुर्मास समय में आपने सत्संग का अच्छा लाभ लिया। उसके फलस्वरूप त्यागमय जीवन पर आपका अच्छा आकर्षण रहा।

विक्रम सं० १९६८ वैशाख शुदी १२ बुधवार के शुभ दिन रतलाम नगर में चारित्र-रत्न, पूज्यपाद, गणाधीश्वर जो श्रीमद् त्रैलोक्यसागर जी म० सा० के करकमलों से २२ वर्ष की युवावस्था में आपने संयम स्वीकार किया। शासनरागी, दीवान-बहादुर, सेठ केशरीसिंहजी सा० बाफना ने दीक्षा महोत्सव धाम धूम से किया।

विनयादि श्रेष्ठ गुण, गुरुभक्ति, एक निष्ठ सेवा, आदि गुणों से तथा जन्म से तीव्र स्मरणशक्ति वाले होने के कारण कुछ ही समय में आपने शास्त्रों की गहन शिक्षा प्राप्त कर ली। अंग्रेजी भाषा के साथ हिन्दी पर भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आपका वर्चस्व अच्छा था। आपने हिन्दी भाषा में गद्य व पद्य की रचना की। प्राकृत भाषा के कई आगमों का भाषांतर हिन्दी में किया। कई स्वतंत्र ग्रन्थों की हिन्दी भाषा में रचना की।

आपश्री ने राजावाटी, तोरावाटी, शेखावाटी, गोडवाड, झोरामगरा, मालवा, राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र कच्छ, खानदेश आदि भारत के विभिन्न प्रांतों में विचरकर जैनधर्म का प्रचार किया।

सं० १९८६ में कच्छ प्रान्त के अंजार नगर में देश के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी महात्मा गांधी से मुलाकात हुई। "खादी और जैन साधु" इस विषय पर काफी महत्वपूर्ण चर्चा हुई। आपके सुधारकवादी विचारधारा से महात्मा जी प्रभावित हुए।

आपश्री के गुरुवर्य, चरितरत्न, गणाधीश्वरजी श्रीमद् त्रैलोक्यसागरजी म० सा० सं० १९७४ राजस्थान के लोहावट नगर में श्रावण शुक्ला १५ के दिन स्वर्ग सिधाये। उसके पश्चात् प० पू० प्रातः स्मरणीय, शान्त-स्वभावी, आचार्यदेव श्री १००८ श्रीजिनहरिसागरसूरीश्वरजी म० सा० समुदाय के संचालक बने। आपश्री सरल स्वभाव के चारित्र-सम्पन्न, आचार्य थे। आप पूज्यपाद श्री ने काफी समय तक समुदाय का संचालन किया। सं० २००६ में श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ (मेडतारोड) में स्वर्ग सिधाये। तत्पश्चात् सं० २००६ माघशुदी ५ को प्रतापगढ़ (राजस्थान) में भारतवर्ष के समस्त खरतरगच्छ श्रीसंघ ने भारी समारोह पूर्वक आपश्री को आचार्य पद पर विभूषित किया। जबसे समुदाय संचालन को सारा उत्तरदायित्व आपके ऊपर आ गया।

आपश्री ने कई जगह विद्याशाला, पाठशाला, पुस्तकालय आदि की स्थापना करवाई। आप नवयुग के निर्माता थे, उस समय जनता में पढ़ने-लिखने का अधिक प्रचार नहीं था, जिसमें कन्याशिक्षा प्रायः शून्य-सी थी।

हिन्दी भाषा के आप प्रखर हिमायती थे। आपकी व्याख्यान शैली बड़ी विद्वता पूर्ण व रोचक थी। साधु साध्वी वर्ग को अभ्यास कराना उसे प्रवचन (भाषण) शैली सिखाना आपश्री का खास लक्ष था।

प्रवर्तनी श्रीवल्लभश्रीजी, प्र० श्रीप्रमोदश्रीजी, प्र० श्रीविचक्षणश्रीजी आदि साध्वी वर्ग को आपने ही अभ्यास कराया व भाषण शैली सिखायी। समुदाय पर आपका भारी उपकार है। आप द्रव्यानुयोग के अच्छे व्याख्याता थे। कई जिज्ञासु व्यक्ति आपसे तत्वचर्चा कर ज्ञानकी प्यास बुझाने आते थे। तत्वचर्चा के रसिकों के लिये "आगमसार" नामक विवेचनात्मक ग्रंथ की रचना की। आपश्री ने अपने जीवन काल में करीबन ४६ पुस्तकों का प्रकाशन किया। प्रचुर मात्रा में आपने साहित्य की सेवा की, खूब ज्ञान दान दिया। जगह-जगह ज्ञान की प्याऊ खोली।

पूज्य स्व० आचार्य श्री ने अपने जन्म स्थान सैलाना नगर (जि० रतलाम में) ज्ञानमंदिर की स्थापना की। वहाँ के राजा साहब आपके गृहस्थी जीवन के मित्र व सहपाठी थे। राजा साहब के आग्रह से आपने सैलाना में श्रीआनंद-ज्ञानमंदिर की स्थापना की। ज्ञानमन्दिर का शिला स्थापन, सेठ बुद्धिसिंहजी बाफना के कर कमलों से सम्पन्न हुआ, एवं ज्ञानमंदिर का उद्घाटन सैलाना-नरेश के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। श्रीआनंद ज्ञानमंदिर आपके जीवनकी जीती जागती अमर ज्योति है।

आचार्य पद पर विभूषित होने के पश्चात् वि० सं० २००७ का चातुर्मास, करने आप कोटा पधारे। सेठ साहब क कई समय से आग्रह था, अतः आप कोटा पधारे। कोटा के चातुर्मास को ऐतिहासिक चातुर्मास माना जा सकता है। आप चातुर्मास विराजे वहां उसी कोटा नगर में दिगंबर आचार्य पू० श्री सूर्यसागरजी म० व स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्य श्रीचौथमलजी म० भी वहीं चातुर्मास रहे। तीनों महारथियों ने एकही पाट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री जिनेश्वरसूरि (द्वितीय)

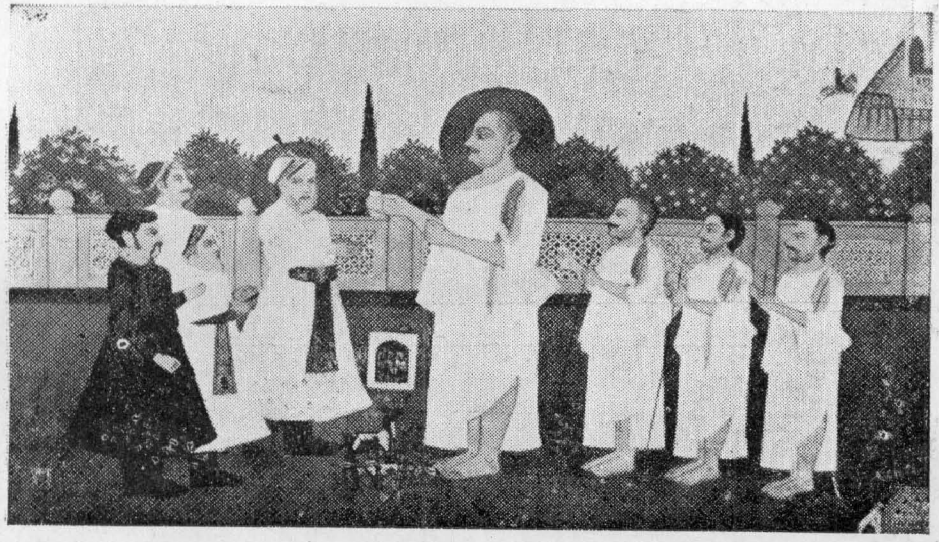

युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि और सम्राट अकबर

उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

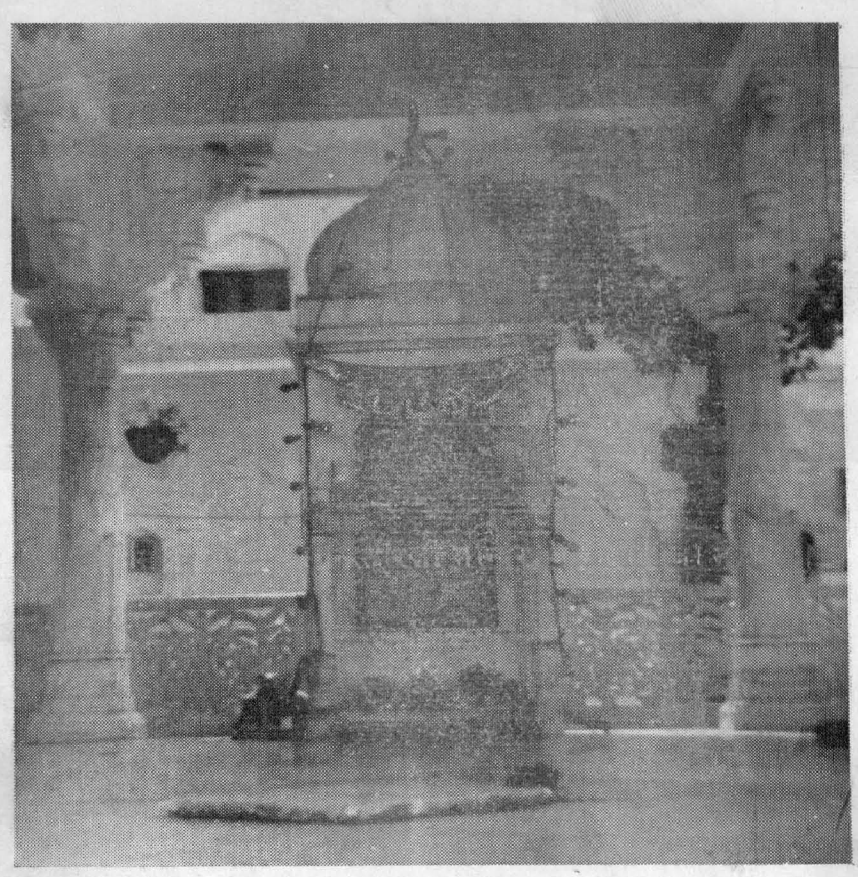

मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि छतरी, महरौली

मणिधारी जिनचन्द्रसूरिजी मन्दिर, बड़ दादाजी महरौली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर से वीतराग की वाणी सुनाई। प्रतिदिन व्याख्यान की झड़ियां बरसने लगी। तीनों महापुरुष भिन्न-भिन्न मान्यता वाले होने पर भी एक जगह पर साथ-साथ प्रवचन देते। मधुर मिलन से जनता को ऐक्यता का अच्छी प्रेरणा मिली।

गच्छमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का मजबूत संगठन एवं योजनाबद्ध प्रचार व विकास के लिये आपश्रीने समस्त श्रीसंघ से परामर्श कर सं० २०११ में अजमेर में प० पू० युगप्रधान दादा साहब श्रीजिनदत्तसूरिजी म० सा० की अष्टम शताब्दी समारोह के अवसर पर आप श्री की प्रेरणा व शासनरागी श्रीप्रतापमलजी सा० सेठिया के परिश्रम से "अखिल भारतीय श्री जिनदत्तसूरि सेवा-संघ" की स्थापना हुई। गच्छ को मानने वाले श्रावक-गण पूरे भारत के कोने-कोने में फैले हुए हैं। अतः एक ऐसी संगठनात्मक संस्था हो, जो सारे देश में गच्छ के मन्दिर, दादावाड़ी, ज्ञानभंडार, शिलालेख आदि की देख भाल व उच्च व्यवस्था कर सके, इस वस्तु को सामने रखकर श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ की स्थापना हुई।

आप श्री ने कई जगह पर दीक्षाएँ, प्रतिष्ठाएँ, अंजनशलाका, उपधान, छःरी पालते संघ निकलवाये जिसमें प्रमुख :—फलोदी से जैसलमेर, इन्दौर से मांडवगढ़, मांडवी से भद्रेश्वरजीतीर्थ, मांडवी से सुथरी तीर्थ आदि।

शाश्वता तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचलजी तीर्थ पर दादा साहब की टोंक में, युगप्रधान पू० दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी म० व श्री जिनकुशलसूरिजी म० सा० के चरण जिनकी प्रतिष्ठा मुगल सम्राट अकबर-प्रतिबोधक, युगप्रधान, जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म० सा० के कर कमलों से सेकड़ों वर्ष पूर्व हुई थी, वह छत्री प्रायः जीर्ण अवस्था में पहुँचने का कारण उनके जीर्णोद्धार के लिये तीर्थ को वहीवट कर्ता, सेठ आनन्दजी कल्याणजी की पेढी से आज्ञा प्राप्त करने में श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ को भारी पुरुषार्थ करना पड़ा। अन्त में आज्ञा मिली और जीर्णोद्धार का पूरा लाभ बम्बई निवासी गुरुदेव भक्त, दानवीर सेठ पुनमचन्दजी गुलाबचन्दजी गोलेछा ने लिया। जीर्णोद्धार होने के बाद उनकी पुनः प्रतिष्ठा के लिये एवं श्रीजिनदत्तसूरि सेवा संघ के द्वितीय अधिवेशन के आयोजन पर पधारने के लिये संघ के प्रमुख श्रावक वर्ग, पूज्यश्रीकी सेवा में सैलाना पहुँचा। श्री संघ की आग्रहपूर्वक की हुई विनति से लाभ का कारण जानकर आप श्री ने पालीताना की ओर विहार किया। गच्छ व समुदाय के पू० मुनिवर्ग व साध्वीजी गण भी पालीताना पधार गये। सेठ आनन्दजी कल्याणजी की पेढी की ओर से पूज्य आचार्यश्री के भव्य प्रवेश महोत्सव का आयोजन किया गया।

सं० २०२६ वैशाख शुक्ला ६ को सिद्धाचलजी तीर्थ पर नव-निर्मित देहरियों में पू० दादा-गुरुदेवों के प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा आप पूज्य श्री के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुई। चातुर्मास का समय निकट आया। श्री संघ के आग्रह से आप मुनि-मंडल सहित वहीं चातुर्मास विराजे। पू० उपाध्यायजी, बहुश्रुत श्री कवीन्द्रसागरजी म० सा० (बाद में आचार्य) पू० श्रीहेमेन्द्रसागरजी म० सा० (वर्तमान गणाधीशजी) पू० आर्यपुत्र श्री उदयसागरजी म० सा० पू० श्री कान्तिसागरजी म० सा० आदि १४ मुनिराज, एवं कुल मिला कर २६ मुनिराजों व ६२ साध्वीजीगण का संयुक्त चातुर्मास पालीताना में हुआ।

चातुर्मास काल में साधु-साध्वियों का पठन-पाठन, भाषण देने की शिक्षा आपश्रीने प्रारम्भ की। चातुर्मास में वर्षा की झड़ियों के साथ-साथ तपस्या की भी झड़ियें लगनी प्रारम्भ हुई। आपश्री की निश्रामें १० मासक्षमण हुए। तपस्वियों का भव्यजुलूस, अट्ठाई-महोत्सव, शान्तिस्नात्र, स्वामी-वात्सल्य का आयोजन हुआ। विजयादशमी से श्री संघ की ओर से स्थानीय नजरबाग में उपधान तप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की आराधना प्रारम्भ हुई। शानदार ढंग से चातुर्मास का समय पूरा हुआ।

प्रतिवर्ष पालीताना में यात्रा के लिये पधारने वाले साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविकाओं को धर्मशाला में ठहरने का स्थान नहीं मिलता था, और मिलता भी था तो उसमें कई झंझटें आती थी। इस संकट को सदा के लिये दूर करने की योजना पूज्यवर आपश्री एवं पू० उपाध्यायजी म० सा० श्रीकवीन्द्रसागरजी म० सा० (बादमें आचार्य) ने बनाई। जयपुर संघ के प्रमुख श्रावक श्रेष्ठिवर्य श्रीहमीरमलजी सा० गोलेच्छा व श्री सिरेमलजी सा० संचेती आदि से परामर्श कर धर्मशाला बनाने के लिये "श्रीजिनहरि विहार" के नाम पर प्लॉट खरीदा गया।

चातुर्मास का समय संपूर्ण हो चुका था, सभी विहार की तैयारियाँ में लगे थे। पू० उपाध्यायजी म० सा० ने पालनपुर की ओर प्रस्थान किया। आप पूज्यवर भी बड़ोदा की ओर प्रस्थान करने वाले थे किन्तु भावी होनहार होकर ही रहता है। एकाएक आपश्री को हार्ट एटेक सा हुआ, किसी प्रकार की बिना बिमारी के समाधिस्थ हुये। आपके अचानक स्वर्गवास से सारे संघ में शोक छागया। आकाशवाणी द्वारा सर्वत्र समाचार प्रसारित किये गये। आपश्री के अन्तिम संस्कार का पूरा लाभ बड़ौदा निवासी, सेठ शान्तिलाल हेमराज पारख ने लिया।

भवितव्यता की खास बात तो यह थी की आपकी निश्रामें पूर्वाचार्य के नाम पर खरिदे हुए प्लाट में पक्की लिखापढी होने के बाद एकही माह के भीतर उसी ही प्लॉट में आपका अग्निदाह हुआ। उन भूमि का भी महान् सौभाग्य समझें कि मकान बनने के पूर्व महापुरुष को स्थापित किया।

कंकुबाई की धर्मशाला में पूज्यवरश्रीजी के आत्म श्रेयार्थ अट्ठाई महोत्सव व शान्तिस्नात्र का भव्य आयोजन किया गया।

पू० स्व० आचार्यश्री अब हमारे बीचमें नहीं रहे किन्तु आप पूज्यवरश्री का आदर्श जीवन आपकी हित शिक्षायें हमारे सामने हैं। हम उनका पालन करते हुए आपश्री के चरणों में हमारी नम्र व हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

आपके आत्मा की महान् पुण्याई थी कि यौवन अवस्था में चारित्र लेकर वीतराग के शासन व गच्छ को दीपाया। आपने शासन पर किये महान् उपकार, श्रीसंघ कदापि नहीं भूल सकता।

वर्तमान में आपके मुनि व साध्वीगण, पू० गणाधीश्वर श्रीहेमेन्द्रसागरजी म० सा० की आज्ञामें महाकौशल, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक, बंगाल, राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में विचर कर शासन का प्रचार करते हैं।

जो अच्छे हैं, और सभी के भलाई की चिंता करते हैं वे सदा के लिये जनता के हृदयपटल पर अजर हैं! अमर हैं!

पूज्य गुरुदेव की पवित्र आत्मा को शत-शत प्रणाम

ॐ शान्ति—

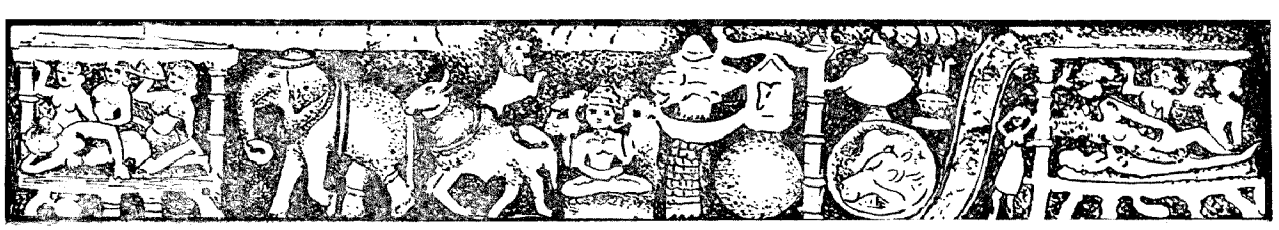

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org